Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-IV
April 2018
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

शुंग कालीन कला एवं साहित्य में सूर्योपासनाः एक अध्ययन

डॉ0 श्रद्धा त्रिपाठी
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास विभाग
राधा रमण मिश्र पीजी कालेज, इलाहाबाद।

अत्यन्त प्राचीन काल से ही सूर्य ऊर्जा का स्रोत रहा है। ऊर्जा और ऊष्मा को प्रदान करने के साथ ही सूर्य अपनी आश्चर्यजनक चमक, शक्ति तथा प्रकाश से सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करता रहा है। दूसरे शब्दों में, अन्धकार को नष्ट कर सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करने वाला एकमात्र सूर्य ही है, वह दिन और रात्रि का अधिष्ठाता है। अर्थात् सूर्य के उदित होने पर दिन एवं अस्त होने पर रात्रि होती है। सूर्य पुष्प, फल एवं विभिन्न खाद्यानों का उत्पादक एवं संरक्षक है। प्राचीन काल के लोग न केवल सूर्य के प्राकृतिक गुणों से अपितु उसके औषधीय एवं स्वास्थ्यवर्द्धक गुणों से भी परिचित थे। अतः सूर्य के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु लोगों ने सूर्य में ईश्वर के दर्शन किए और सूर्योपासना का प्रचलन आरम्भ हुआ। इसके पीछे कहीं न कहीं सूर्य संरक्षण की भावना भी अवश्य ही निहित रही होगी।

वश्व की अनेक प्राचीन सभ्यताओं उदाहरणार्थ यूनान, रोम, मिस्र, ईरान एवं बेबीलोन में सूर्य पूजा का प्रचलन था। भारत में सूर्य पूजा की प्राचीनता नवपाषाण काल तक जाती है।[1] सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग भी सूर्य पूजा करते थे। उत्खनन में मुहरों एवं मृदभाण्डों के टुकड़ों पर चक्र एव स्वस्तिक के चिन्ह अंकित मिले हैं, जिन्हें विद्वानों ने सूर्य से सम्बन्धित किया है।

शुंगकाल में भी सूर्योपासना प्रचलित थी। इसकी पुष्टि शुंग कालीन विभिन्न कलाकेन्द्रों से प्राप्त प्रस्तर तथा मृण्मूर्तियों से होती है।

यहां उल्लेखनीय है कि मौर्य काल के विपरीत शुंगयुगीन कला में सूर्य का मानवीय एवं प्रतीकात्मक दोनों ही रूपों में अंकन प्राप्त होता है। प्रथम शती ईसा पूर्व (शुंग काल) में निर्मित बोधगया के वेदिका स्तम्भ पर चार अश्वों से युक्त रथ में बैठे हुए मानवीय रूप में सूर्य का अंकन प्राप्त होता है। सूर्य भारतीय वेशभूषा धारण किए दर्शाए गए हैं। उनके सिर पर उष्णांश तथा अधोभाग में धोती प्रदर्शित है। सूर्य के दाएं तथा बांए पार्श्व में दो स्त्रियों का अंकन है। उनके हाथों में धनुष–बाण दर्शाया गया है। सम्भवतः यह अन्धकार को दूर करने का संकेत है। इन स्त्रियों की पहचान ऊषा तथा प्रत्युषा से की गयी है।[2] (चित्रफलक–1)

चित्रफलक–1 रथारूढ सूर्य (बोधगया)

प्रस्तर के अतिरिक्त सूर्य की मृ0मूर्तियां भी शुंग कालीन विभिन्न कला केन्द्रों से प्राप्त हुई हैं।

कौशाम्बी से प्राप्त मृ0फलक[3] पर अंकित सूर्य उदीच्य वेशधारी हैं। सूर्य के मुख में मूंछे तथा शरीर पर कोट अथवा कंचुकनुमा वस्त्र है। वह चार अश्वों के रथ पर आरूढ़ हैं। सूर्य के हाथ में तीर चढ़ा धनुष है। सम्भवतः वह अन्धकार को दूर करता दिखाया गया है। सूर्य की एक मृ0मूर्ति पटना (बिहार) से प्राप्त हुई है। पटना से प्राप्त सूर्य की मृ0मूर्ति को के0पी0 जायसवाल[4] तथा सी0सी0 दासगुप्ता[5] ने मौर्य कालीन माना है, किन्तु एस0 के0 श्रीवास्तव[6] ने इस मृ0मूर्ति का समय शुंग काल निर्धारित किया है। इस मृ0मूर्ति में भी सूर्य चतुराश्व नियोजित रथ पर आरूढ़ दर्शाए गए हैं (चित्रफलक–2)। इसी प्रकार की मृ0मूर्ति चिरांड[7] (सारण जिला) से भी प्राप्त हुई है। सूर्य की एक मृ0मूर्ति चन्द्रकेतुगढ़[8] से प्राप्त हुई है, जो शुंग कालीन है। इसमें भी सूर्य चतुराश्वनियोजित रथ पर आरूढ़ हैं तथा सूर्य के दोनों पार्श्वों में दो स्त्रियों का अंकन है।

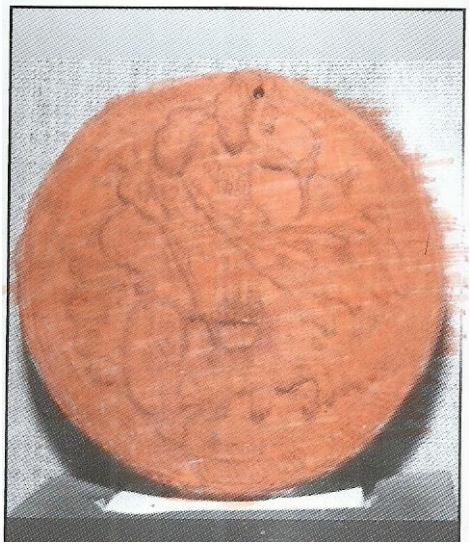

चित्रफलक–2–सूर्य (पटना)

मानवीय मूर्तियों के अतिरिक्त सूर्य का प्रतीकात्मक अंकन भी शुंग युगीन कला में प्राप्त होता है। सांची के कई अभिलेख स्वस्तिक प्रतीक से प्रारम्भ किए गए हैं।

स्वस्तिक सूर्य का, गति का व्यापकता का तथा चार दिशाओं का बोध कराने वाला प्रतीक माना गया है। सूर्य के साथ सम्बन्धित होने के कारण स्वस्तिक गति का भी प्रतीक माना गया।[9] चक्र भी सूर्य का प्रतीक माना गया है और चक्र के रूप में ही सूर्य की पूजा की गयी। सूर्य हैं भी एक चक्र के समान। सूर्य गति और काल का बोध कराता है।[10] शुंग काल में निर्मित भरहुत, बोधगया तथा शुंग–सातवाहन काल में निर्मित सांची महास्तूप पर सूर्य रूपी चक्र का अंकन मिलता है।

शुंग कालीन सिक्कों पर भी सूर्य का प्रतीकात्मक अंकन प्राप्त होता है। उज्जयिनी से प्राप्त सिक्कों पर स्वस्तिक का अंकन मिलता है।[11] पांचाल से प्राप्त सूर्यमित्र और भानुमित्र के सिक्कों पर सूर्य का अंकन है। यह अंकन चक्र के रूप में है। इन सिक्कों का समय द्वितीय शती ईसापूर्व अर्थात् शुंग काल है।[12] कौशाम्बी, अयोध्या तथा मालवा से प्राप्त सिक्कों पर स्वस्तिक उत्कीर्ण है।[13]

ये सभी कलात्मक तथा पुरातात्विक साक्ष्य शुंग युग में सूर्य पूजा के व्यापक प्रचलन की ओर संकेत करते हैं।

साहित्यिक साक्ष्यः– कलात्मक साक्ष्यों की पुष्टि साहित्यिक साक्ष्यों द्वारा भी होती है। सूर्य का प्राचीनतम उल्लेख वैदिक साहित्य में देवता के रूप में मिलता है।

शुंग युग में रचित मनुस्मृति में उल्लिखित है कि–

अहोरात्रे विभजते सूर्यो मानुषदैविके।
रात्रि स्वप्नाय भूतानां चेष्टायै कर्मणामहः।।

अर्थात्

सूर्य मनुष्यों की तथा देवताओं की दिन–रात का विभाग करता है, उनमें जीवों के सोने के लिए रात तथा कार्य करने के लिए दिन होता है।[14] मनुस्मृति में सूर्य को अन्य देवताओं के साथ राजा के शरीर में विद्यमान कहा गया है–

सोमागन्यर्कानिलेन्द्रणां वित्ताप्पत्योर्यमस्य
च अष्टानां लोकपलनां वपुर्धारयते नृपः।[15]

पतंजलि कृत महाभाष्य में आदित्य, अर्क, सविता, पूषन ये सूर्य के अन्य नाम मिलते हैं।[16] एक स्थान पर उल्लिखित है कि, सविता हमें श्रेष्ठ कर्म की ओर प्रवृत्त करें। आदित्य को अर्पित की जाने वाली हवि भी 'आदित्य' कही जाती थी।[17]

पुराणों में सूर्य प्रतिमा विधान का उल्लेख प्राप्त होता है। मत्स्य पुराण में सात अश्वों से युक्त रथारूढ़ सूर्य का उल्लेख प्राप्त होता है।[18]

उल्लेखनीय है कि रथारूढ़ सूर्य की प्रस्तर मूर्ति बोधगया से प्राप्त हुई है, जहां अश्वों की संख्या सात न होकर मात्र चार है। (चित्रफलक–1) इसी प्रकार रथारूढ़ सूर्य की मृ0मूर्तियां चंद्रकेतुगढ़, पटना तथा कौशाम्बी से भी प्राप्त हुई हैं। इन सभी का समय शुंग काल है।

मत्स्य पुराण में[19] सूर्य रथ पर स्थित सारथी अरूड़ का भी उल्लेख प्राप्त होता है। कौशाम्बी से प्राप्त सूर्य मृ0मूर्ति में उनके सारथी अरूड़ का भी अंकन मिलता है, जिसके हाथ में घोड़ों की लगाम है।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार[20] सूर्य का वर्ण सिन्दूर के समान लाल तथा मुख में चमकती हुई मूंछे हैं, सूर्य उदीच्य वेशभूषाधारी एवं चार भुजा संयुक्त हैं। शरीर विविध आभूषणों से सुसज्जित है। इसके साथ ही इस पुराण में यह भी उल्लिखित है कि, सूर्य सारथी अरूण द्वारा संचालित सात अश्वों से युक्त रथ पर आसीन हों। कौशाम्बी से प्राप्त सूर्य मृ0मूर्ति में सूर्य के मुख में मूछें दिखाई गई हैं तथा उन्हें उदीच्य (उत्तरी) वेशधारी प्रदर्शित किया गया है। उनके सारथी अरूण का अंकन भी इस मृ0फलक में है। यह मृ0मूर्ति विष्णुधर्मोत्तर पुराण में प्राप्त वर्णन के अनुरूप ही है।

महाकाव्यों में भी सूर्योपासना से सम्बन्धित उल्लेख प्राप्त होते हैं। रामायण[21] में राम एवं लक्ष्मण द्वारा आश्रम में विश्वामित्र के साथ रहते हुए सूर्य को प्रातः काल अर्घ्य दिए जाने का उल्लेख मिलता है।

महाभारत में भी सूर्योपासना से सम्बन्धित अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। महाभारत में एक स्थान पर उल्लिखित है कि, विराट पत्नी के आदेश से सुरा लाने के लिए कीचक भवन जाते समय द्रौपदी ने रास्ते में सूर्य की आराधना की। उनकी आराधना के फलस्वरूप ही सूर्य ने उनकी रक्षा की व्यवस्था की थी।[22] श्रीकृष्ण द्वारा भी सूर्योपासना का उल्लेख महाभारत में प्राप्त होता है।[23] शरशय्या पर शायित भीष्म ने भी सूर्य की उपासना की थी।[24]

प्रथम शती ईसापूर्व में रचित बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्दपन्ह[25] में सूर्य के सात गुणों का उल्लेख है, जैसे–सूरज पानी को सुखा देता है, सूरज काले अंधियारे को दूर करता है, सूर्य ऊष्मा प्रदान करता है, सूर्य अपनी रोशनी में अच्छे और बुरे को दिखाता है आदि तथा यह भी उल्लिखित है कि भिक्षुओं को सूर्य के गुणों को अपनाना चाहिए।

शुंग युग में सौर सम्प्रदाय का भी उदय हो चुका था क्योंकि महाभारत में एक स्वतंत्र सौर सम्प्रदाय का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है। सौर सम्प्रदाय के अन्तर्गत सूर्य को देवता के रूप में प्रतिष्ठित कर उनकी पूजा की जाती थी तथा उनमें उन सभी गुणों की कल्पना की गयी जो एक देवता में विद्यमान होते हैं।[26] पतंजलि ने भी अपने ग्रंथ महाभाष्य में सौर सम्प्रदाय का उल्लेख किया है।[27] महाकाव्यों में कई स्थानो पर सूर्य के मानव रूप में प्रकट होने का उल्लेख प्राप्त होता है।[28] यहां उल्लेखनीय है कि, सूर्य की मानवीय मूर्तियों का निर्माण शुंग काल में प्रारम्भ हो चुका

था, जो बोधगया, कौशाम्बी तथा चन्द्रकेतुगढ़ आदि स्थलों से प्राप्त हुई हैं। महाभारत[29] से ज्ञात होता है कि लोग पुष्प–माला, धूप–दीप आदि के द्वारा सूर्य पूजा करते थे। इससे स्पष्ट होता है कि सूर्य पूजा पद्धति का भी इस युग में काफी विकास हुआ।

इस प्रकार कलात्मक साक्ष्यों तथा साहित्य में प्राप्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, शुंग कालीन समाज में सूर्य पूजा का व्यापक प्रचलन था। सूर्योपासना केवल लोकजनों के मध्य ही प्रचलित नहीं थी वरन् उच्चवर्गीय लोग भी सूर्य पूजा करते थे। वर्तमान समय में भी सूर्य पूजा का व्यापक प्रचलन है।

आधुनिक काल में भी लोग स्नान के बाद सूर्य को अर्घ्य देते हैं। रविवार व्रत, मकर संक्राति आदि पर आज भी अनेक कृत्य किये जाते हैं।

संदर्भः–

1. श्रीवास्तव, वी0सी0, सन वर्शिप इन एन्शेन्ट इण्डिया, इलाहाबाद,1972, पृ.23–30।
2. बरूआ, बी0एम0, गया एण्ड बोधगया, कलकत्ता, 1934, पृ084, चित्र 42।
3. काला, एस0 सी0, टेराकोटा फिगराइन्स फ्रॉम कौशाम्बी, इलाहाबाद, 1950, पृ0 35, प्लेट XXIए।
4. जायसवाल, के0पी, जे0 आई0 एस0ओ0ए0, वाल्यूमII, 1935 प्लेट XXX–2।
5. दास, गुप्ता, सी0सी, ओरिजन एण्ड एवल्यूशन ऑफ इण्डियन क्ले स्कल्पचर, कलकत्ता, 1961, पृ0 152, चित्र 75।
6. श्रीवास्तव, एस0के0, टेराकोटा आर्ट इन नॉरदर्न इण्डिया, दिल्ली, 1996, पृ 101।
7. इण्डियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू, 1964–65, पृ0 7, प्लेट VIII डी।
8. काला, एस0सी0, मृत्तिका कला, इलाहाबाद, 1970, पृष्ठ 28; इण्डियन आर्कियोलाजी, 1955–56, प्लेट LXXII.
9. श्रीवास्तव, ए0एल0, भारतीय कला प्रतीक इलाहाबाद, 1997, पृ0 24।
10. श्रीवास्तव, ए0एल0, भारतीय कला सम्पदा, इलाहाबाद 2001, पृ0 68।
11. एलन, जे0, कैटलॉग ऑफ द कॉइन्स ऑफ एन्शेन्ट इण्डिया, लन्दन, 1936, पृ0 147।
12. गुप्ता, पी0एल0, भारत के पूर्वकालिक सिक्के, दिल्ली, 1969, पृ0195।
13. श्रीवास्तव, वी0सी0, द रिलीजियस स्टडी ऑफ सिम्बल ऑन द अवन्ति कॉइन्स, पृ.133–136।
14. मनुस्मृति 1/65, मेधातिथि भाष्य सहित, हिन्दी टीकाकार पण्डित श्री हरगोविन्दशास्त्री चौखम्बा, वाराणसी प्रथम संस्करण, संवत 2063 सन्, 2007।
15. मनुस्मृति 5/95।
16. महाभाष्य, 6–04–12।
17. वही, 5–03–55 पृ0 452, 4–02.–24।
18. अग्रवाल, वासुदेवशरण, मत्स्यपुराणः ए स्टडी, वाराणसी, 1963, पृ0 311, मत्स्य पुराण 261, 1–8 (सप्ताश्वं चैक चक्रं च रथं तस्य प्रकल्पयेत्)।
19. अरूणः सारथि श्रास्य पद्मिनीपत्र सन्निभः मत्स्यपुराण– 261, 1–8।
20. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 67, 2–3 (रविः कार्यः शुभश्मश्रुः सिन्दूरारूणसमप्रभः, उदीच्यवेशः स्वकारः सर्वभरण संयूतः)।
21. रामायण 1/35/8–9,।
22. उपतिष्ठत सा सूर्यं मुहूर्तमवला ततः। विराटपर्व 15/19; भट्टाचार्य, सुखमय, महाभारत कालीन समाज, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण 2010, पृ0 307।
23. उपत्स्थे विवस्वतन्तम्। उद्योग पर्व 83/9।
24. उपशिष्य विवस्वन्तमेवं शरशताचितः। भीष्म 120/54; वही पृष्ठ 307।
25. भिक्षु, जगदीश कश्यप, मिलिन्दप्रश्न, श्रावस्ती, द्वितीय संस्करण, 2000, पृ0 477–478।
26. महाभारत, 7.82.16; 3.3.60।
27. महाभाष्य 2.2.2.2.29।
28. महाभारत 3.300.99, 13.96.20; रामायण 6.105.31।
29. महाभारत 3.3.33, 3.329, 42।

****